गेरुआ रोधी गेहूं की नई किस्म तैयार है

पिछले कुछ वर्षों से गेहूं पर गेरुआ रोग के आक्रमण का खतरा मंडरा रहा है। मगर अब मेक्सिको के शोध संस्थान CIMMYT ने घोषणा की है कि वहां गेरुआ की इस नई किस्म का सामना करने की क्षमता वाली गेहूं की किस्म तैयार कर ली गई है।

दरअसल गेरुआ गेहूं का एक घातक रोग है मगर 1960 के बाद से इसका प्रकोप लगभग नगण्य रहा है। इसका श्रेय CIMMYT द्वारा किए गए अनुसंधान को ही जाता है कि पिछले 40 वर्षों से गेहूं गेरुआ से महफूज़ रहा है। इस प्रयोगशाला ने 1960 के दशक में गेहूं में तीन जीन्स प्रविष्ट कराए थे जो गेरुआ रोग की कारक फफूंद को खत्म कर देते थे। मगर यूगाण्डा में 1999 में खबर मिली कि गेरुआ फफूंद-प्रतिरोधी हो गई है। इस नई फफूंद को यूजी-99 कहा गया। इसने एक बार फिर गेहूं की खेती को खतरे में डाल दिया। गौरतलब है कि गेहूं इन्सानों के लिए कुल कैलोरी में से 20 प्रतिशत सप्लाई करता है।

बहरहाल, CIMMYT ने ही इस दिशा में एक आपात कालीन कार्यक्रम हाथ में लिया। CIMMYT के प्रमुख वैज्ञानिक रवि सिंह ने हाल ही में बताया है कि वे गेहूं की ऐसी किस्म तैयार करने में सफल हुए हैं जो यूजी-99 का सामना कर सकेगी। इस नई किस्म किंगबर्ड को तैयार करने के लिए एक जीन संकुल का उपयोग किया गया है। खास बात यह है कि गेरुआ का सामना करने के अलावा इसकी उपज भी वर्तमान किस्मों से ज़्यादा है।

अब सवाल समय का है। पूरी दुनिया को इस किस्म के बीज मुहैया कराने में कम से कम दो साल का समय लगेगा। क्या ये बीज फफूंद से पहले किसानों तक पहुच पाएंगे? इतने बीज पैदा करना अकेले प्रयोगशालाओं के बस की बात नहीं है। इस काम में किसानों को शामिल करना होगा। मगर किसान किसी प्रायोगिक किस्म को उगाने को तभी राज़ी हो सकते हैं जब उससे उत्पन्न बीज को खरीदे जाने की गारंटी हो। यह तो स्पष्ट है कि मात्र यूजी-99 प्रतिरोधी किस्म तैयार करने से काम नहीं चलेगा, किसी को तो पर्याप्त बीज उगाना पड़ेंगे।

वैसे भी दुनिया भर के लिए पर्याप्त बीज तैयार करने में कम से कम दो साल का समय लगेगा। उम्मीद करें कि हम फफूंद और उसके तेज़ी से फैलते बीजाणुओं से ज़्यादा तेज़ रफ्तार से इस काम को कर पाएंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***